MediamenteFalso

इंस्टाग्राम की कृत्रिम "बुद्धि" पोस्टों में मौजूद प्रतीकों के आधार पर उनसे भेदभाव करती है; हाल ही में यह मेरी एक पेंटिंग दिखाने वाली पोस्ट के साथ हुआ।
इस मामले का विरोधाभास यह है कि जिस पोस्ट को धुँधला (सेंसर) किया गया, वह ठीक इसी पर सोचने को कहती थी: हाल के इतिहास में मीडिया की भूमिका, और सत्ता के पक्ष में सच को तोड़-मरोड़ने की उसकी क्षमता।
कृति में तोए के सुपर मारियो को नाज़ी टोपी पहने दिखाया गया है, जो 13 अप्रैल 1945 के 'कोर्रिएरे देल्ला सेरा' के असली पन्ने पर तैलरंग से चित्रित है।
उस ऐतिहासिक क्षण में इटली को मित्र-राष्ट्रों के सामने आत्मसमर्पण किए दो बरस हो चुके थे, फिर भी हमारा प्रमुख दैनिक शीर्षक लगाता था: "विजय तक लड़ने की लौह इच्छा", और उसके बग़ल में हिटलर और मुसोलिनी की तस्वीर, जो नक़्शे पर अपनी सैन्य चालें बना रहे थे।
उस पन्ने के लेख एक अतिरंजित कल्पना का यथार्थ रचते हैं, जिसमें यह मान लिया गया है कि फ़ासिस्ट अपने जर्मन सहयोगी के साथ मिलकर इटली और उपनिवेशों में युद्ध शीघ्र ही जीत लेंगे।
हमारे यथार्थ के समांतर एक यथार्थ में रची उस उत्कृष्ट शृंखला 'द मैन इन द हाई कैसल' में (निर्देशक डेविड सेमेल, Amazon Prime Video) धुरी राष्ट्रों ने युद्ध जीत लिया है, जर्मनी और जापान ने दुनिया बाँट ली है; इतालवी फ़ासिस्टों का ज़िक्र चालीस में से किसी भी कड़ी में नहीं है। '45 के कोर्रिएरे का वह शीर्षक अस्सी साल बाद एक डिस्टोपियन कल्पना-कृति में भी कोई सहारा नहीं पाता।
यथार्थ में, 13 अप्रैल 1945 को जर्मन स्तालिन की सेनाओं के हाथों वियना खो रहे थे; बारह दिन बाद इटली अमेरिकियों द्वारा मुक्त होने वाला था, और पंद्रह दिन बाद मुसोलिनी पक्षपाती लड़ाकों द्वारा मृत्युदंड पाने वाला था।
कोर्रिएरे के संपादक एर्मान्नो अमिकुच्ची ने उन दिनों यथार्थ को तोड़ने-मरोड़ने का चुनाव किया, क्योंकि सत्ता अब भी नाज़ियों (जिन्होंने मिलान पर क़ब्ज़ा कर रखा था) और इतालवी सामाजिक गणराज्य के फ़ासिस्टों के हाथ में थी।
आज '45 से भी अधिक, बाक़ी सब सत्ताओं को चलाने वाली इकलौती सत्ता आर्थिक है; इसी कारण इंटरनेट अब वह अभिव्यक्ति-स्वातंत्र्य और सूचना के मुक्त प्रवाह का स्थान नहीं रहा जिसे हमने सहस्राब्दी के आरंभ में बनाने में हाथ बँटाया था: आर्थिक क्रैकन ने हमारा खिलौना हड़प लिया और उसे पैसा बनाने की मशीन में बदल दिया।
इंस्टाग्राम और बाक़ी सोशल नेटवर्क अपवाद नहीं हैं: वे एक-दूसरे को जानने, साझा करने या संवाद करने के लिए नहीं, बल्कि एक बाज़ार बनाने के लिए हैं।
इस संदर्भ में सेंसरशिप गुमनाम कृत्रिम "बुद्धियों" द्वारा की जाती है, ताकि आदान-प्रदान और उससे उपजने वाले आर्थिक मूल्य के सृजन को बढ़ावा मिले।
कोशिश यह है कि विवादास्पद सामग्री, भेदभाव, वैकल्पिक सूचनाएँ, हिंसा आदि को अधिकतम घटाया जाए, ताकि यथासंभव समावेशी एक ऐसा स्थान बने जिसमें पूर्ण विश्वास और सुरक्षा के साथ बेचा और ख़रीदा जा सके; संस्कृति और कला को, तदनुसार, इस अनिवार्यता के आगे झुक जाना चाहिए।
मनोरंजन करते हुए ज़्यादा बिकता है, तुच्छ बातों की चर्चा करते हुए ज़्यादा बिकता है, कथन का स्तर सबकी समझ में आने लायक़ रखते हुए ज़्यादा बिकता है; यही कारण है कि हम जो अधिकांश पोस्ट देखते हैं, वे दुखांत-हास्य दुर्घटनाओं की, मोहक स्त्रियों की, और स्वाभाविक ही उँगलियों के एक स्पर्श से ख़रीदे जा सकने वाले

उत्पादों की बात करती हैं।
जो इटली में सत्तर के दशक में जन्मा है, जैसे यह लिखने वाला, उसे याद है — हमने जिन तमाम गंदगियों को देखा उनमें — निजी टेलीविज़नों का जन्म, जहाँ पहली बार मूर्खता, तुच्छता और भारी वक्ष अधिकांश कार्यक्रमों का प्रमुख विषय बने। इन विषयों के साथ विज्ञापन-संग्रह इतना अच्छा चला कि 'राय' को तथ्य के आगे झुकना पड़ा — इतना कि आज दोनों प्रसारकों में शुल्क के सिवा कोई अंतर नहीं।
कहा जा सकता है कि बेर्लुस्कोनी इसे समझने वाले पहले व्यक्ति थे, इसलिए उद्यमी दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ, परिणामतः सबसे धनी, और बाद में सबसे अधिक मत पाने वाले भी।
इतालवी गणराज्य की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष, गणराज्य के राष्ट्रपति बनने की चर्चा में रहे — काश उन्हें यह समझ आ जाता कि मतदाता तुच्छताओं और भारी वक्षों को पूजता है, वेश्याओं को सह लेता है, पर उनके ग्राहकों को माफ़ नहीं करता।
कल के और परसों के अख़बारों में वह भविष्य मिलता है जो अतीत में देखा और चाहा गया था, और वह अतीत मिलता है जो भविष्य में कभी साकार नहीं हुआ; झूठ को सन्दर्भ-व्यवस्था के पद पर बिठाया हुआ, समझाने और भड़काने के लिए झूठ बोलना, और सबसे बढ़कर युद्ध — शांति के इन बीते अस्सी वर्षों का इकलौता स्थिरांक।
इतिहास हमेशा विजेताओं ने लिखा है, राजनीतिक और सैन्य सत्ता ने।
आज अतीत, इतिहास, वर्तमान और भविष्य का विचार, यथार्थ को छलने की तकनीकी और मीडिया-शक्ति के ज़रिये लिखे जाते हैं — संदेश पाने वालों के अहं को सहलाते हुए, यहाँ तक कि वे यह मानने लगें कि यथार्थ का जो स्थानापन्न वे देख रहे हैं, वही यथार्थ है।
स्थानापन्न का सहारा मानव जीवन के हर पहलू में बढ़ता जा रहा है, और अधिकांश लोग इसे नवाचारी, पर्यावरण-हितैषी, मुक्तिदायी, स्वास्थ्यकर, बेहतर और सुरक्षित मानकर जीते हैं।
पालतू जानवर, रोबोट, सिलिकॉन की गुड़ियाँ बच्चों, पतियों, पत्नियों, प्रेमियों और नातियों के स्थानापन्न के रूप में इस्तेमाल होते हैं; प्लास्टिक सर्जरी स्थानापन्न देह और यौन पहचान बनाने के लिए; अश्लील सामग्री और सुरक्षित यौन-संबंध स्वयं यौन क्रिया का स्थान ले लेते हैं; कृत्रिम भोजन, वीगन भोजन, पोषण-बार, वे दवाएँ जो हर क्षेत्र में प्रदर्शन दिला देती हैं — मनुष्य स्वयं अपने ही स्थानापन्न हैं।
हमारे अस्तित्व के सबसे अंतरंग और बुनियादी अवकाशों की ओर ऐसे उत्पाद, विचार और व्यवहार बढ़ाए जाते हैं जो हमें वास्तविक जीवन से दूर ले जाना चाहते हैं — एक कृत्रिम, आभासी, संश्लेषित जीवन की ओर, जिसमें आंतरिक अनुभव की जगह वह छली हुई छवि ले लेती है जो समाज हमारे बारे में रखता है।
अनंत बार दोहराया गया झूठ सच नहीं बनता, पर वह छल को सामाजिक रूप से स्वीकार्य आचरण बना देता है; सत्य का बोध इस चेतना के पीछे खो जाता है कि हर सत्य पूर्णतः या अंशतः कोई छल समेटे हो सकता है।
इस संदर्भ में सबसे कुशल और उदार व्यक्ति सच होने के लिए बहुत अच्छा लग सकता है; और सबसे नीच व्यक्ति गढ़े हुए सत्यों से संत घोषित लग सकता है।
सत्य को परिभाषित करने की शक्ति तकनीकी और मीडिया-तंत्र को सौंपना स्वीकार करके, हम यह स्वीकार करते हैं कि एक ऐसे सूचना-भँवर में जिएँ जो एक छल को दूसरे के मुक़ाबले टिकाए रखने के लिए बनाया गया है।
कोरोना वायरस से मचे कोलाहल ने एक स्थानापन्न, नक़ाबपोश जीवन-अनुभव के विचार को और भी सराहनीय बना दिया — ऐसा अनुभव जिसमें हम समूह की मान्यता चाहते हैं, बिना अलग-अलग व्यक्तियों से मिले।
हमारे दिनों का इतिहास फिर वही लिखेंगे जो झूठ से बनी एक लड़ाई के विजेता होंगे; पर जिस तकनीकी सामर्थ्य तक हम पहुँचे हैं, वह हमें ऐसे पैमाने की भ्रम-रचनाएँ गढ़ने देगी जो पहले कभी नहीं देखी गईं।
हम स्वयं से झूठ बोलते हैं, और हर दिन ख़ुद को ऐसा करते हुए पकड़ पाना कठिन होता जाता है; स्थानापन्न

जीवन वास्तविक जीवन को निगल रहा है।
मेरे मस्तिष्क में असंख्य छवियाँ जमा हैं, कम या ज़्यादा उपयोगी ढंग से, और वे सबसे अप्रत्याशित क्षणों में बाहर कूद पड़ती हैं; ये दृश्य-टिप्पणियाँ हैं, चीज़ों को जानने की मेरी भूख को तृप्त करने के व्यर्थ प्रयास में सहेजी हुई। विकृत छवियाँ, समय से घिसी हुई, बाद की घटनाओं के प्रकाश में दोबारा देखी और दोबारा तौली हुई, टूटी हुई, अपने संदर्भ से अलग की हुई, जीवन के साथ आने वाली अनिवार्य विस्मृति से मरोड़ी हुई — स्मृति के उन पौराणिक छोटे ऊँटों के निरंतर हमले और लूट से मरोड़ी हुई। मेरे जीवन की छवियाँ, फ़िल्मों और टीवी कार्यक्रमों की, संगीत-वीडियो की, प्रदर्शनियों और संग्रहालयों की, विज्ञापनों की, मानव-जाति के प्रतीक-पुरुषों की, किताबों और कहानियों की — और मेरे सपनों की छवियों तक।
बेसुरे तत्व चित्र-रूपी फल में अपना दृश्य और वैचारिक, वर्णगत और आकारगत, हास्यमय, ब्रह्मांडीय और अतियथार्थ सुर फिर पा लेते हैं।
पात्र और दृश्य, भीतरी कमरे और अवकाश — एक विशाल क्रॉसओवर कड़ी के, जो मेरी "volupté de voir" से जन्मी है, अपने मस्तिष्क के गुप्त कमरों में मेरे टहलने से — जैसे असिमोव की उस अद्‌भुत यात्रा के भीतर कोई फ़्लानूर।
खोज के इस खेल के ज़रिये, दृश्य संदर्भों का कोलाज एक निरंतर बौद्धिक ऊर्ध्वीकरण बन जाता है, जो उन छवियों और प्रतीकों के प्रतिमा-मूल्य पर अटकलों से भरा है जो आपस में क्रिया करते हैं और एक ऐसा आख्यान रचते हैं जो छवियों के अपने स्वाभाविक स्थान की उपेक्षा नहीं कर सकता, पर नए
आख्यान और अर्थ के नए रास्ते खींचे बिना भी नहीं रह सकता। अपनी और दूसरों की कल्पना से बनी छवियों का बहुरूपदर्शक एक टेढ़े दर्पण में उसकी छवि प्रतिबिंबित करता है जो हमने देखा, जो हमने देखा हुआ माना, जो हम समय बीत जाने पर देखते हैं — देखने-आज़माने-विचारने-फिर से गढ़ने-फिर देखने के अनंत क्रम में। हम जो देखा और भोगा है उसी से रचते हैं, और अनंत बार उस संसार को फिर से रचते हैं जिसमें रहना हम कल्पना में चाहते हैं।

Luca Motolese

motolese.com — मूल पाठ इतालवी में